एक दवा बनने में एवरेज 12 से 15 साल और एक हज़ार मिलियन डॉलर्स खर्च होते हैं

चार राज्यों के इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फैकल्टीज़ सीख रहे ड्रग डिज़ाइन, डिस्कवरी, डिलिवरी की बारीकियां

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) इंदौर में कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ मटेरियल्स फॉर रिन्यूएबल एंड सस्टेनेबल एनर्जी और टूल्स एंड टेक्नीक्स इन ड्रग डिज़ाइन, डिस्कवरी एंड डिलीवरी विषय पर लर्निंग कोर्स चलाए जा रहे है। एमएचआरडी के टेक्निकल एजुकेशन क्वालिटी इम्प्रूवमेंट प्रोग्राम (टीईक्यूआईपी) के सहयोग से चलाए जा रहे इस प्रोग्राम में मप्र-छग, गुजरात और उत्तराखंड के इंजीनियरिंग कॉलेज के स्टूडेंट्स और फैकल्टीज़ हिस्सा ले रहे हैं। दोनों ही कोर्स 9 मार्च तक चलेंगे।

टूल्स एंड टेक्निक इन ड्रग डिज़ाइनिंग के बारे में उन्हें बताया गया कि एक दवाई को लैबोरेटरी की बेंच से अस्तपताल के बेड तक आने में औसतन 12 से 15 साल और 500 से 1000 मिलियन डॉलर्स का खर्च आता है। इतनी बड़े इन्वेस्टमेंट के पहले एफीशिएंट टूल्स और टेक्निक्स की जानकारी होना आवश्यक है ताकि लीड कम्पाउंड का पता पहले ही लगाया जा सके। इसी तरह क्लिनिकल ट्रायल्स के पहले प्री-क्लिनिकल ट्रायल्स भी उतने ही ज़रूरी हैं। आईआईटी के कोर्स में ड्रग डेवलपमेंट के विषय में लीड कंपाउंड के सिंथेसिस/डिस्कवरी, कम्प्यूटर एडेड ड्रग डिज़ाइन, यूज़ ऑफ ओमिक्स टेक्नोलॉजी, बीमारियों के डायग्नोसिस और थैरेपी में नेनौटेक्नोलॉजी के ज़रिए बायोमेडिकल फील्ड के एडवांसमेंट सहित अन्य विषयों पर बात की जा रही है। ये कोर्स आईआईटी के डिसिप्लीन ऑफ बायोसाइंस और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट में आयोज़ित किया जा रहा है। वहीं कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ मटेरियल्स फॉर रिन्यूएबल एंड सस्टेनेबल एनर्जी थीम पर हो रहे कोर्स में देशभर के 40 से ज्यादा पार्टिसिपेंट्स हिस्सा ले रहे हैं। उन्हें ऐसे मटेरियल्स के बारे में जानकारी दी जा रही है जो एनर्जी जनरेशन और स्टोरेज के लिए उपयोगी हैं। कोर्स के दौरान सोलर सेल्स, सुपरकैपेसिटर्स और बायोडीज़ल के बारे में थ्यौरिटिकल और प्रैक्टिकल नॉलेज भी दिया जाएगा।

Dainik Bhaskar (Indore), 6th March 2019, City Bhaskar, Page-17